महकता कोना

डॉ. दीपा
मो. 8744998293

अवनी सोने ही जा रही थी कि उसके वाट्सएप पर 'हाय' का एक मैसेज आया। इससे पहले कि वह मैसेज पढ़ती तुरंत दूसरा और तीसरा मैसेज आ गया।

'कैसी हो?'

'मुझे याद करती हो या भूल गई?'

अवनी ने तीनों मैसेज एक साथ पढ़ डाले और गहरी सोच में डूब गई।

'आखिर कौन हो सकता है? ऐसा तो कोई परिचित ही लिख सकता है।' अननॉन नम्बर था, इसलिए अवनी ने मैसेज का रिप्लाई करने में तेजी न दिखाई।

जब अवनी ने उस नंबर का प्रोफाइल पिक खोला तो वहाँ एक ऐसी तस्वीर लगी थी जहाँ एक ग़ज़ल की पंक्तियाँ लिखी थीं–'हम तेरे शहर में आए हैं मुसाफिर की तरह, सिर्फ एक बार मुलाकात का मौका दे दे।'

इसे पढ़ते ही अवनी सोचने लगी। कोई शायराना मिजाज व्यक्ति लगता है। 'क्या बात है आपने अभी तक मेरे मैसेज का रिप्लाई नहीं किया?' सामने से तुरंत चौथा मैसेज आ गया। अवनी बड़बड़ाने लगी। कौन है जो ये बार-बार मैसेज पर मैसेज किए जा रहा है। अवनी ने 'हू आर यू?' का मैसेज भेज दिया और सोचने लगी, अगर मुझे जानता है तो सीधे-सीधे नाम लिखकर भेज देगा, फालतू के मैसेज किए जा रहा है। वैसे भी सुबह की घटना से उसका का मूड खराब था।

'कुछ तो बोलो यार?'

सामने से फिर मैसेज आ गया। अवनी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि मैसेज कौन कर रहा है। तुरंत फिर एक मैसेज आ गया–'पहचाना नहीं?'

अवनी का धैर्य जवाब दे गया–'अपना नाम बताते हो या नंबर ब्लॉक कर दूँ।'

'नहीं, नहीं। ऐसा जुल्म मत करना।'

'नाम बताते हो या नहीं?' अवनी ने गुस्से में मैसेज टाइप करके सेंड कर दिया।

'बताता हूँ–बताता हूँ।'

नाम तो लिखा हुआ नहीं आया। हाँ एक तस्वीर जरूर आई जिसे डाउनलोड करते ही अवनी मुस्कुरा दी। और फिर एक और मैसेज–'मैं श्रेय श्रीवास्तव, तुम्हारे कॉलेज का दोस्त।'

अवनी ने लगातार चार-पाँच मैसेज एक साथ भेज दिए–'तो तुम हो। पहले

अपना नाम नहीं बता सकते थे। इतना नाटक करने की क्या जरूरत थी। कहाँ थे इतने सालों से?'

'न कोई फोन, न कोई मैसेज।'

'तुम तो गायब ही हो गए थे।'

'कहीं चले भी गए थे तो बता कर नहीं जा सकते थे?'

'तुम्हारे पास तो मेरा नंबर था। कॉल क्यों नहीं किया?'

जवाब में श्रेय का रिल्पाई आया।

'मैं एम.बी.ए. करने लंदन गया था। छह साल बाद इंडिया लौटा हूँ। मैंने यहाँ एक मल्टीनेशनल कंपनी में एज ए मैनेजर जॉइन किया है। अब यहीं रहूँगा।' कुछ देर रुककर उसका फिर मैसेज आया, 'क्या हम कल मिल सकते हैं?'

अवनी ने बिना किसी संकोच के रिप्लाई मैसेज कर दिया, 'ओके।' जिसे अपने मोबाइल के स्क्रीन पर देखकर श्रेय प्रसन्न हो गया।

'कहाँ?' अवनी का फिर मैसेज आया।

'मैगी पाइंट पर, जो हमारे कॉलेज के बगल में है। जहाँ हम कॉलेज टाइम में जाते और मैगी के साथ-साथ चाय का आनंद लेते थे।' मैगी पाइंट शॉप के पीछे एक छोटा-सा पार्क था जिसमें आस-पास के लोग व्यायाम करते, टहलते और मजदूर वर्ग लंच टाइम में खाना खाता और साथ ही आराम करता था।

श्रेय का मैसेज फिर अवनी के मोबाइल की स्क्रीम पर था, 'तुम्हें याद है वहाँ एक गुलमोहर का पेड़ लगा था उसके नीचे पत्थर की कुर्सी लगी हुई थी। हम अक्सर वहाँ बैठकर मैगी खाते और चाय पीते थे और एग्जाम टाइम में पढ़ाई भी करते थे। तुमने तो उस जगह का नामकरण भी कर दिया था–'महकता कोना'।

श्रेय के लंबे मैसेज को पढ़ने के बाद अवनी ने दीवार घड़ी पर नजर डाली। रात के 12 बज चुके थे। अवनी ने अंतिम मैसेज टाइप किया, 'रात बहुत हो गई है। कल कॉलेज के पास बने मैगी पाइंट पर 12 बजे मिलते हैं।' और लाइट बंद करके सो गई।

अगली सुबह अवनी को तैयार होकर जल्दी नाश्ता करने पर माँ ने पूछा, 'क्या बात है अवनी सुबह से तैयार हो गई। कहीं जाना है क्या?'

'माँ आपको श्रेय याद है? मेरा कॉलेज फ्रैंड, जो कई बार हमारे घर भी आया था।'

'हाँ याद है। कहाँ है वो आजकल? अब घर भी नहीं आता? शादी हो गई उसकी?' माँ ने एक ही बार में कई सवाल पूछ डाले।

'कॉलेज खत्म होने के बाद उससे कभी बात न हो सकी और न ही उसका फोन आया, लेकिन कल अचानक उसका वाट्सएप पर मैसेज आया कि वो लंदन से दिल्ली वापस आ गया है और अब यहीं रहकर जॉब करेगा। उसने यहाँ किसी मल्टीनेशनल कंपनी में मैनेजर की पोस्ट पर जॉइन किया है। आज उसकी छुट्टी है और वो मुझसे मिलना चाहता है। माँ मैं जाऊँ?' अवनी ने पूछा। माँ ने अनुमति दे दी, 'ठीक है। चली जा।'

'मैगी पाइंट' कॉलेज से महज पाँच मिनट की दूरी पर था। मैगी पाइंट पर अवनी समय से पहले पहुँच गई और इंतजार करती हुई सोचने लगी कि श्रेय पहली बार यहीं मिला था।

वहाँ मैगी के साथ-साथ चाय और बिस्कुट भी मिलते थे। कॉलेज टाइम में अवनी और उसकी सहेली अंजू अक्सर वहाँ मैगी खाने जाते थे। एक दिन अवनी और अंजू वहाँ चाय पीने गई थीं। वहाँ श्रेय भी था। दुकानदार ने मुझे और श्रेय को एक साथ चाय लेने के लिए कहा, मैंने और श्रेय ने एक साथ चाय के कप की ओर हाथ बढ़ाया कि सारी चाय नीचे गिर गई। मैंने श्रेय को गुस्से में डॉट लगा दी थी।

'आपका हाथ जला तो नहीं?' गलती के अहसास से भरा स्वर श्रेय के मुख से निकला था।

'सॉरी-सॉरी!'

'अब क्यों सॉरी बोल रहे हो। चाय तो गिर गई न।' मेरा स्वर तल्ख हो गया और भौंहे कुछ तन गई थी।

'कोई बात नहीं मैं आपको दूसरी चाय दिलवा देता हूँ। भईया इन्हें दूसरी चाय दे दो। मैं पैसे दे दूँगा।'

'हमें नहीं चाहिए। पहले गलती करते हो फिर माफी मांगते हो।' अवनी बोली।

अंजू जो वहीं खड़ी थी। अवनी को चुप करा रही थी और साथ ही बोले जा रही थी, 'छोड़ न यार चाय के पैसे मैं दे दूँगी। वैसे भी वो माफी माँग रहा है।'

अंजू ने दुकानदार को तीन कप चाय बनाने का ऑर्डर दिया। तब अंजू ने अवनी को घूर कर देखा। अंजू तब मुस्करा दी। श्रेय ने चाय के पैसे देने की कोशिश की किंतु अंजू ने तुरंत दुकानदार को चाय के पैसे दे दिये। जब तीनों चाय पीकर जाने लगे तब श्रेय ने अंजू से कहा था, 'आप अपनी सहेली से मुझे माफ करने के लिए कहिए न।'

श्रेय की तरफ से निवेदन करते हुए अंजू ने कहा, 'माफ कर दे यार।' और फिर अंजू श्रेय को अपना और अवनी का परिचय देने लगी कि वे इसी कॉलेज में पढ़ती हैं। श्रेय ने भी अपना परिचय दिया कि वह भी इसी कॉलेज

में बी.कॉम प्रथम वर्ष का छात्र है। परिचय की औपचारिका को निभाया गया। इसके बाद वे तीनों अच्छे मित्र बन गए थे।

अवनी अभी भी सोच ही रही थी कि इतने में श्रेय आ गया, आते ही उसने पूछा, 'कैसी हो अवनी?'

'ठीक हूँ।'

'तुम कैसे हो?'

'अच्छा हूँ।'

'पर तुम्हारी आवाज का स्वर तुम्हारे चेहरे से मेल नहीं खा रहा।' श्रेय ने अवनी के मन की उदासी को भांपते हुए कहा।

'कुछ नहीं यार?'

दोनों ने दुकानदार से चाय के कप अपने-अपने हाथों में लिये और साथ लगे पार्क में बिछी कुर्सियों पर जाकर बैठ गये। बीच में छूट गई बात को पकड़ते हुए श्रेय ने पूछा, 'अपने दोस्त को नहीं बताओगी?'

अवनी ने श्रेय का औपचारिक हाल-चाल पूछा और फिर कल की घटना के बारे में श्रेय को बताना शुरू किया, 'पढ़ाई के दौरान मैंने कभी विवाह के बारे में नहीं सोचा था। जब मैंने पीएच.डी. शोध प्रबंध जमा करा दिया तो माँ कहने लगी कि अब मुझे विवाह कर लेना चाहिए। किंतु मैं उन्हें कहती कि नौकरी लग जाने के बाद विवाह करूंगी।' चाय की एक चुस्की लेकर अपने गले से उतारने के बाद वह बोली, 'अब तो माँ भी तानै मारते हुए कहती कि मैं 30 वर्ष की हो चुकी हूँ। नौकरी जब लगनी होगी लग जाएगी। पर मैं शादी कर लूं। उसे लगता है कि मेरी शादी हो गई तो उसकी एक चिंता खत्म हो जाएगी।'

अवनी ने देखा कि श्रेय उसकी बात सुन रहा है, वह आगे बोली, 'माँ मुझसे कहती है कि मोहल्ले की सारी लड़कियों की शादी हो चुकी है। वह बताती है कि उससे लोग पूछते हैं कि अपनी लड़की यानी मेरी शादी कब करोगी?' अवनी बात करते हुए चिंतित भाव में ठहर-सी गई। श्रेय अभी भी चुप था, जैसे वह केवल अवनी को ही सुनना चाहता था। अवनी ने आगे बताया, 'माँ को हमारे पड़ोसी रघु जी ने एक रिश्ता बताया था। लड़का पीएच.डी. कर रहा है। माँ ने मुझसे कहा कि देख ले! अगर तुझे लड़का पसंद आया तो बात आगे बढ़ाएंगे। मैंने समान योग्यता की बात सुनकर लड़के वाले को घर बुलाने के लिए कह दिया।'

अवनी ने आगे बताया, 'एक हफ्ते बाद लड़के वाले को घर बुलाया गया। जिस दिन लड़के वाले घर आने वाले थे, माँ ने हम सबको सुबह-सुबह ही जगा दिया था। 'जल्दी उठो। नहा-धोकर तैयार हो जाओ। लड़के वाले को ग्यारह बजे का टाइम दिया है।' मेरी छोटी बहन नींद में बोले जा रही थी, 'माँ थोड़ा और सोने दो न। दीदी को देखने के लिए आने वाले हैं। हमें क्यों जल्दी जगा रही हो? उसे बोलो वो जल्दी उठेगी।' अवनी ने श्रेय को बताया, 'पर माँ कहाँ मानने वाली थी, उसने तो फरमान जारी कर दिया था, 'चलो सब जल्दी उठो और काम में मेरा हाथ बंटाओ।'

अवनी ने आगे बताया, 'हम सब जल्दी उठ गए और घर को साफ-सुधरा करके स्वयं नहा-धोकर तैयार हो गए तथा रसाई में माँ का हाथ बंटाया। लड़के वाले ग्यारह बजे के बजाय बारह बजे हमारे घर पहुंचे। दरवाजे की घंटी बजी। माँ ने दरवाजा खोला और लड़के वालों को नमस्कार करते हुए, अंदर आने को कहा और उन्हें बैठक में बैठा दिया। माँ, छोटी बहन और भाई ने मिलकर सबको चाय-नाश्ता दिया। गुप्ता अंकल के साथ कुल मिलाकर सात लोग आए थे। लड़के के माता-पिता, भईया-भाभी, दीदी-जीजा और लड़का। चाय-नाश्ते के बाद मुझे बुलाया गया।'

श्रेय को अपनी बात बताते हुए अवनी चाय के खाली डिस्पोजल कप को टेबल पर हाथों से घूमा रही थी।, उसने श्रेय के चेहरे पर एक बार देखा और नजरों को टेबल पर टिकाकर आगे बताने लगी, 'मैं सामान्य सलवार-कमीज़ पहने हुए हाथों में पानी भरे गिलास की ट्रे लेकर बैठक में आई और सबको नमस्कार किया। मुझे पास में रखी एक खाली कुर्सी पर बैठने को कहा गया। मैं उस कुर्सी पर बैठ गई। भीतर से मैं बहुत नर्वस थी, क्योंकि आज तक मैंने केवल नौकरी के लिए इंटरव्यू दिये थे, लेकिन बहु के पद के लिए यह मेरा पहला साक्षात्कार था। अब मौखिक प्रश्नों का सिलसिला प्रारंभ हुआ।'

श्रेय ने हल्की-सी मुस्कान के साथ बीच में टोकते हुए पूछा, 'साक्षात्कार! बहु के पद के लिए? यह कुछ नया तरीका नहीं है, चीजों को देखने का?' कहने के साथ ही वह एक हाथ के कमीज की बाजू से कफ के खुले बंटन को लगाने लगा।

अवनी ने कहा, 'एक लड़की जहाँ समाज में मौजूद है, वहाँ से चीजों को देखने का उसका दृष्टिकोण ऐसे ही बनता है। वह कई सारे प्रश्नकर्ताओं से घिरी बैठी होती है, मैं भी वैसे ही बैठी थी, पहला सवाल मेहमानों में सबसे

उम्रदराज व्यक्ति, शायद वो लड़के का पिता था, उसने पूछा, 'क्या नाम है?'

'अवनी।' मैंने बताया था।

फिर दूसरा सवाल आया कि क्या करती हो? मैंने जवाब दिया, 'फिलहाल तो कुछ नहीं करती। हाँ, दो माह पूर्व मैंने अपना पीएच.डी. शोध-प्रबंध जमा किया है। अब लेखन कार्य कर रही हूँ।' लड़के के परिजनों में अधिकांश ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे इसलिए पीएच. डी. को सामान्य डिग्री मानते हुए मुझसे तुरंत अगला प्रश्न पूछा गया।

'बी.एड. किया है?'

'नहीं।' मैं बोली।

मैं पीएच.डी के बारे में विस्तार से बताती कि उससे पहले ही लड़के के पिता के बगल में बैठा व्यक्ति बोल पड़ा, 'पीएच. डी. एक कोर्स है। जैसे रमेश कर रहा है। उसमें कोई बड़ी बात नहीं। बी.एड. का महत्त्व अधिक है। आपको बी.एड. करना चाहिए।' लड़के का जीजा लड़के के पिता की ओर देखते हुए बोला था। उन्होंने मुझे मुफ्त में ही बी.एड करने की सलाह दे दी और पीएच.डी. की डिग्री को मूल्यहीन घोषित कर दिया। मैं कह देना चाहती थी कि आपका लड़का स्वयं पीएच.डी. कर रहा है। क्या उसने आपको कभी नहीं बताया कि पीएच.डी डिग्री है या कोर्स? मुझे लड़के के परिजनों पर दया आ रही थी, लेकिन मुझे लड़के पर उतना ही क्रोध आ रहा था जो चुपचाप बुत बना मुझे घूरे जा रहा था। कम से कम उसे अपने परिजनों को बताना चाहिए था कि पीएच.डी. उच्च शिक्षा से संबंधित डिग्री है। खैर एक संस्कारी लड़की की तरह मुझे केवल उतना ही बोलना था, जितना मुझसे पूछा गया था। मेरा अधिक बोलना संस्कारहीनता की निशानी समझी जाती।

'जी नहीं किया, क्योंकि मेरी बी.एड. करने की इच्छा नहीं थी।' मैंने मन को शांतचित्त करते हुए उत्तर दिया।

'खाना बनाना आता है?' अब प्रश्न पूछने की बारी लड़के की माँ की थी। कहने को यह सामान्य प्रश्न है किंतु सदियों से प्रत्येक लड़की से यह प्रश्न किया जाता रहा है। ससुराल पक्ष को सदैव यह लगता है कि बहू है तो खाना बनाएगी ही, इसलिए यह प्रश्न पूछकर वे सुनिश्चित हो जाना चाहती थी कि बहू आने पर सास और ननद की खाना बनाने के काम से छुट्टी मिल जाएगी। इसलिए उन्हें यह चिंता रहती है कि 'खाना कौन बनाएगा?' वे चाहती हैं कि घर में ऐसी बहू आए जो खाना बनाने में पारंगत हो। उन्हें रसोईघर की सारी जिम्मेदारी बहू के कंधों पर जो डालनी होती है, किंतु यदि यही प्रश्न लड़के से किया जाए, 'उसे खाना बनाना आता है?' तो लड़का इसे अपना अपमान समझता है यानी लड़की ही खाना बनाएगी। खैर! मैंने 'हाँ' में उत्तर दिया। अगला प्रश्न भी खाने से जुड़ा था।

'नॉनवेज बना लेती हो?'

मैंने 'हाँ' में उत्तर तो दे दिया, लेकिन मैं उनसे प्रति-प्रश्न करना चाहती थी कि 'क्या आप नानवेज खाती हो।' लड़की स्वयं नॉनवेज खाती हो या ना खाती हो किंतु उसे नॉनवेज बनाना आना चाहिए अन्यथा उसका नॉनवेज न बनाना और न खाना विवाह में एक रुकावट बन सकती है।

'जॉब करोगी?'

यह प्रश्न लड़के के जीजा ने पूछा। जो, दसवीं कक्षा तक पढ़े थे और गाँव में फोर्थ क्लास की सरकारी नौकरी करते थे।

मैंने 'हाँ' में जवाब दिया, किंतु मेरे मन में यही चल रहा था कि उनको कह दूँ कि इतनी पढ़ाई मैंने घर बैठने के लिए नहीं की है। यदि मुझे जॉब न करनी होती तो इतना पढ़ती ही नहीं।

'जॉब करोगी तो घर का काम कौन करेगा?' अगला प्रश्न किया, 'जब मैं घर का काम करने में समर्थ न हुई तो कामवाली बाई लगा लूँगी।'

मेरा जवाब उन्हें पसंद नहीं आया। उन्होंने खीझते हुए तुरंत तीसरा प्रश्न मेरी ओर कर दिया, 'जॉब लग जाएगी तो आप हवा में तो नहीं उड़ोगी?' इस प्रकार के घटिया प्रश्न की मैंने कल्पना नहीं की थी, फिर भी मैंने पूछ ही लिया, 'मैं कुछ समझी नहीं। आप क्या कहना चाहते हैं?'

'मेरा मतलब है जॉब लग जाने के बाद सास-ससुर की सेवा, खाना बनाना और घर का सारा काम आपको ही करना होगा। हम अपने घर में कामवाली बाई नहीं रखेंगे। आपको जॉब करने के लिए समय से जाना होगा, और समय पर घर लौटना होगा। अपनी मर्जी से आप कभी मायके नहीं जायेंगीं।'

उनके प्रश्नों से मेरे भीतर गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था कि एक और प्रश्न बारूद की तरह मेरी ओर कर दिया गया 'इतनी पतली क्यो?' यह प्रश्न मुझे मेरी अस्मिता पर चोट जैसा चुभा। मैं दुबली-पतली हूँ लेकिन वह लड़का बहुत मोटा था। मैं उनसे क्रास-कोस्चन करना चाहती थी। मन में लगा कि बोल दूँ, 'मैं पतली हूँ आप इसे छोड़ो। पहले ये बताओ कि आपका लड़का इतना मोटा क्यों है?' अवनी की यह बात सुनकर श्रेय हँस दिया।

हँसते हुए वह बोला, 'तुम्हें बोल देना चाहिए था।' वह लगातार हँसे जा रहा था।

अवनी ने श्रेय को हँसते हुए टोका, 'तुम हँसना बंद करोगे या नहीं?'

'अच्छा बाबा ठीक है। आगे बताओ क्या हुआ था।' कहते हुए श्रेय चुप लगा गया।

अवनी ने बताया, 'होना क्या था, पारिवारिक संस्कार और इज्जत के कारण मन की बात मन में ही रह गई। मुझे अंदर जाने का इशारा किया गया और मैं अंदर चली गई, लेकिन अभी प्रश्नों का क्रम समाप्त नहीं हुआ था। एक अंतिम और महत्त्वपूर्ण प्रश्न तो अभी बाकी था, जो इस रिश्तों की बुनियाद था। जिसे मुझसे नहीं मेरे परिजनों से पूछा गया था, 'आपकी लड़की हमें पसंद है।' यह सुनकर माँ और मेरे भाई-बहन प्रसन्न हो गए। माँ ने छुटकी को मिठाई लाने को कहा।

'रुकिए' अभी काम की बात करनी बाकी है।' लड़के के पिताजी बोले थे।

'क्या बात है?' माँ ने चिंतातुर स्वर में पूछा।

'शादी कितने लाख की करोगे?' यह प्रश्न लड़के के बड़े भाई ने किया।

माँ बोली 'जैसी शादी होती है वैसी ही करेंगे। 'आप मेरी बात का मतलब समझी नहीं। मेरा कहने का मतलब है 'शादी में कितने लाख रुपए नकद दोगे?' हमें पाँच लाख रुपये नकद और पाँच लाख की शादी चाहिए, यानी कुल मिलाकर 10 लाख रुपये तक की शादी होनी चाहिए।'

अवनी कुछ पल को रुकी फिर आगे श्रेय को बताया, 'मैं अंदर से ये सब बातें सुन रही थी। अभी तक मैंने एक संस्कारी लड़की की भाँति लड़के वाले के किसी भी प्रश्न का प्रत्युत्तर न दिया था, लेकिन सीधे-सीधे दहेज की बात सुनकर मेरे धैर्य का बांध टूट गया। एक घंटे तक पूछे जाने वाले सवालों से मेरे भीतर गुस्सा भर गया था, वो लावा बनकर फूट पड़ा। मैं जो चुपचाप शांत लड़की की तरह उनके सवालों का सीधा-सीधा जवाब दिए जा रही थी, अब कमरे से बाहर निकलकर बैठक में आ गई। माँ कुछ कहती, उससे पहले मैं बोल पड़ी। 'क्या कहा आपने पाँच लाख रुपये और वो भी नकद?' अवनी के चेहरे पर तैश साफतौर पर उभर आया, उसने श्रेय को बताया, 'मेरा चेहरा गुस्से से लाल हो गया था और आवाज में कड़कपन आ गया था। मैंने उनसे कहा कि अच्छा आप ये बताओ कि आपको किस बात का पैसा दिया जाए? इसलिए कि आप लड़के वाले हैं। लड़के के पिता मेरी बात काटते हुए बीच में बोले कि उन्होंने अपने लड़के को पढ़ाया है। आज वो पीएच.डी. कर रहा है। मुझे उनकी बातों पर हँसी आ गई। मैंने उनसे कहा कि वाह अंकल जी आप भी कमाल हैं। आपने अपने लड़के को पढ़ाया है। मेरी माँ ने मुझे अकेले पढ़ाया है। आपके लड़के ने अभी पीएच.डी. का एक साल पूरा किया है। मैं पीएच.डी. पूरी कर चुकी हूँ। फिर तो आपको मुझे पैसा देना चाहिए क्योंकि मैं आपके लड़के से आगे हूँ, और आपको बहू नहीं चाहिए। आप एक नौकरानी की तलाश में हैं और वो भी मुफ्त की। जो दिन-रात आपकी चाकरी में लगी रहे। माफ करना अंकल जी, मुझे आपके लड़के से विवाह नहीं करना। इतने घटिया प्रश्न जिस लड़के के सामने पूछे जा रहे हो और वो मूकदर्शक की तरह बैठकर देख रहा हो। आगे भी वो क्या मेरे साथ खड़ा हो पाएगा? नहीं! कभी नहीं! मुझे नहीं करनी आपके लड़के से शादी।'

सारी बात सुनकर श्रेय को अच्छा लगा, वह कह उठा, 'वाह मेरी झांसी की झलकारी! तुमने तो सीधा सिक्सर लगा दिया।' श्रेय ने खुश होते हुए कहा।

श्रेय के प्रोत्साहन भरे शब्दों से अवनी को खुशी हुई, वह बोली, 'माँ मुझे बीच-बीच में चुप करा रही थी, लेकिन मैं लगातार बोलती रही। लड़के की माँ मुझे बद्तमीज बोल रही थी। अंत में सब खड़े हो गए। लड़के का पिता बोला था, 'यह रिश्ता नहीं हो सकता।' जाते-जाते सब यही बोल रहे थे कि ऐसी लड़की से शादी कौन करेगा? मुझे इस रिश्ते के जुड़ने से अधिक टूटने की खुशी थी। इस प्रकार मुझे बहू के पद के लिए रिजेक्ट कर दिया गया, क्योंकि ससुराल पक्ष संस्कारी बहू के नाम पर मूक-बधिर लड़की चाहते थे। जो आत्मसम्मान को तिलांजलि देकर गलत बातों का विरोध न करे। यदि उसने ऐसा किया तो वह संस्कारहीन है तथा उसकी परवरिश पर प्रश्नचिह्न लगने शुरू हो जाते हैं।'

अवनी ने चेहरे को रुमाल से पोंछा, और फिर श्रेय को बताया, 'भले ही हमारे समाज में दहेज प्रथा का प्रचलन न हो, किंतु आज का शिक्षित दहेज की माँग करने लगा है।'

श्रेय ने अवनी की सारी बात एकाग्र होकर सुनी। श्रेय अवनी को एकटक देखते हुए यही सोच रहा था कि यह वही लड़की है जो रोते हुए को हँसाने की क्षमता रखती थी। भाग्य की विडम्बना तो देखिए इतनी, चंचल, नटखट लड़की की आँखें में नमी है। श्रेय सोचते हुए

गहराई तक उतर गया, उसका ध्यान तब टूटा जब उसके कान में अवनी के शब्दों ने आवाज दी, 'तुम मेरे पुराने दोस्त हो इसलिए तुम्हें अपने मन की सारी बात बता दी।' कहते हुए अवनी भावुक हो गई।

'तुम क्यों रोती हो यार! रोना तो उनको चाहिए जिन्होंने इतनी अच्छी लड़की को ठुकरा दिया। अपने आँसू पोंछो और मुस्कुरा दो। अरे भई, तुम ही तो कहती थी न कि–मन का हुआ तो अच्छा, न हुआ, तो और अच्छा।'

'क्या मैं इतनी बुरी हूँ श्रेय कि कोई मेरे लिए बना ही नहीं। खैर! छोड़ों ये सब। तुम अपनी बताओ। एम.बी.ए. करने विदेश क्या गए अपनी दोस्त को ही भूल गए। क्यों? कम से कम एक कॉल तो कर सकते थे। इतने सालों बाद एक बार भी अपनी दोस्त की याद नहीं आई। मेरे पास तो तुम्हारा नम्बर नहीं था, लेकिन तुम्हारे पास तो मेरा नम्बर था न?'

'ऐसी बात नहीं है अवनी। मैंने सदैव तुम्हें याद किया, क्योंकि तुम्हें कभी भूला ही नहीं। मेरा मोबाइल खराब हो गया था मैंने वहाँ जाकर दूसरा मोबाइल और नम्बर लिया। तुम तो जानती हो छह वर्ष पूर्व आज की भांति सभी के पास टच-स्क्रीन वाले मोबाइल नहीं होते थे। तुम्हारे और मेरे पास भी कीपेड न थे और उस समय फेसबुक और वाट्सएप का भी इतना क्रेज नहीं था। फिर भी मैंने तुम्हें कई बार फेसबुक में ढूंढ़ने की कोशिश की, किंतु तुम नहीं मिली। बस यही दुआ करता था कि जब भी इंडिया जाऊँगा, तुमसे जरूर मिलूँगा, किंतु एम.बी.ए. करने के बाद मेरी एक कंपनी में मैनेजर की पोस्ट पर जॉब लग गई थी, इसलिए वहाँ जॉब करता रहा और पता ही नहीं चला कि छह साल कैसे बीत गए। एक दिन पापा का कॉल आया और वो बोले, 'तू दिल्ली आ जा और अपना घर बसा ले। मैं उनकी बात नहीं टालता।' बात करते हुए श्रेय ने एक अल्पविराम लिया और आगे बताने लगा, 'माँ के जाने के बाद वे अकेले हो गए थे। किंतु मेरी परवरिश करते-करते उन्हें इसका एहसास न हुआ। उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। अपना पूरा जीवन मेरे लिए समर्पित कर दिया। अब मेरी बारी है, मैं पापा के साथ रहूँगा और उनकी देखभाल करूंगा। पापा छह साल तक अकेले रहे पर अब ऐसा नहीं होगा।'

'मैं तुम्हें एफबी पर मिलती भी कैसे? मैंने अपने नाम से अकाउंट खोला ही नहीं था। मैंने 'महकता कोना' नाम से अकाउंट खोला था। दोस्तों का महकता कोना। ...ये तो तुमने बहुत अच्छा किया। माता-पिता का सहारा बनना चाहिए। बड़ों की छत्रछाया में ही बच्चों का पूर्ण पल्लवन हो सकता है।'

श्रेय कॉलेज टाइम से अवनी को मन ही मन पसंद करता था, किंतु उसके मन की बात कभी जुबान तक आ न सकी। आज श्रेय अवनी से वही बात करने आया है, जिसे वह वर्षों पहले कहने की हिम्मत न जुटा पाया था।

'अपने दोस्त की एक डिमांड पूरी करोगी अवनी?' श्रेय ने संभावना भरे स्वर में अवनी से कहा।

'दोस्त बोलते हो और डिमांड भी करते हो। तुम तो अधिकार के साथ ऑर्डर करो। बोलो तुम्हें क्या चाहिए?'

'क्या तुम मेरी जीवनसंगिनी बनोगी?'

अवनी को समझ नहीं आ रहा था कि वह श्रेय की बात सुनकर प्रसन्न हो या दुखी, क्योंकि वह जानती थी कि श्रेय सवर्ण जाति का है। वह श्रेय को आश्चर्य से देखती है। श्रेय अवनी का अच्छा दोस्त है लेकिन...।

'तुम जानते हो न मैं एस.सी. हूँ और तुम जनरल।' अवनी ने पूछा।

श्रेय ने बेहिचक कहा, 'इससे क्या फर्क पड़ता है कि तुम एस.सी. हो और मैं जनरल। मुझे तुम पसंद हो, और मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। यहाँ जाति कहाँ से आ गई। क्या तुम इतना पढ़ने के बाद भी जातिभेद में विश्वास करती हो?'

'मैं जातिभेद में विश्वास नहीं करती। लेकिन मैंने पढ़े-लिखे लोगों को जातिभेद की खाई को भरने के स्थान पर और गहरा करते देखा है श्रेय। उनकी कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है।'

'मैं इन बातों को नहीं मानता।' श्रेय ने जाति व्यवस्था से असहमति दर्ज की। वह एक पल को बोलते हुए ठहरा, और फिर बोला, 'जानती हो अवनी इतने सालों बाद जब मैं विदेश से घर लौटा तो पापा के चेहरे पर एक सुकून दिखाई दिया। हमने रात को एक साथ बैठकर खाना खाया। जानती हो, उन्होंने मुझसे क्या पूछा।' अवनी को बात बताते हुए श्रेय अपनी स्मृति में उतर गया, वहाँ श्रेय के पापा थे, जो कह रहे थे, 'बरखुरदार, अब शादी कर लो।' उनकी बात सुनकर मैं मुस्कुरा दिया। उन्होंने कहा, इतने दिनों विदेश में रहकर आया है, फिर भी मेरे सामने शरमा रहा है।' उन्होंने रोटी का एक कौर मुँह में ले जाने के बाद मुझसे पूछा, 'अच्छा बता, वहाँ कोई लड़की मिली?'

'नहीं पापा।'

'फिर तो लड़की खोजने के लिए मुझे ही मेहनत करनी पड़ेगी। क्या तुझे

आज तक कोई लड़की पसंद नहीं आई?'

माँ के गुजरने बाद लंबे समय तक साथ-साथ रहने से हम पिता-पुत्र के बीच के संबंध मित्रतापूर्ण थे। उनकी बात सुनकर मैं मुस्कुरा दिया, किंतु इस बार मेरे चेहरे का गुलाबीपन पापा ने भांप लिया और पूछ बैठे, 'कौन है वो? कहाँ रहती है, क्या करती है? क्या उसकी शादी हो गई?'

पापा के पूछने पर मैंने खुले मन से बात की, 'एक लड़की थी पापा, लेकिन मुझे नहीं पता कि अब वो क्या करती है। उसकी शादी हुई या नहीं? उसे कैसे खोजूं, यह मेरी चिंता है।'

'तूने कभी उससे संपर्क करने का प्रयास नहीं किया?' पापा ने पूछा था।

मैंने बताया था, 'किया था पापा। लेकिन मेरे पास उसका फोन नंबर नहीं था। मैंने उसे फेसबुक पर भी खोजा था, वो नहीं मिली। उसका नाम अवनी था मेरे कॉलेज में पढ़ती थी। उसके पिता का देहांत हो चुका था तथा उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उसकी माँ प्राइवेट जॉब करती थी। वो एस.सी. थी।'

'कहाँ है वो लड़की?' पापा ने पूछा।

'मुझे नहीं पता?' मैंने उन्हें बताया, पर तभी अचानक से मुझे याद आया कि मैंने फाइनल ईयर में अपने सभी दोस्तों का मोबाइल नंबर एक डायरी में लिखा था। मैंने खाना खाने के बाद अलमारी में डायरी को खोजने की बात पापा से कही।

पापा ने मुझसे कहा, 'उसका नंबर मिल जाए तो उसे कॉल करना और मुझे बताना, क्या बात हुई।' फिर पापा उठकर अपने बैडरूम में चले गये।

मैंने भी खाने के बर्तन रसोई में रखे और हाथ धोने के बाद स्टडी रूम में जाकर तुरंत अल्मारी में डायरी ढूंढ़ने लगा। मुझे वह डायरी मिल गई।

डायरी में अवनी तुम्हारा नंबर मिल गया। मैंने तुरंत तुम्हारा नंबर अपने मोबाइल में सेव किया और वाट्सएप पर चैक किया तो वहाँ प्रोफाइल में तुम्हारी तस्वीर देखकर मैं खुश हो गया, तुरंत तुम्हें मैसेज कर दिया।

श्रेय ने एक-एक करके सारी बात अवनी को बता दी थी, आगे उसने कहा, 'जब मैंने तुम्हारे बारे में अपने पापा को बताया तो वे बोले, 'देखो बेटा, जिंदगी में वही करो, जो मन करे। तुम विदेश जाकर एमबीए करना चाहते थे। मैंने तुम्हें नहीं रोका, तो अब भला मैं तुम्हारी पंसद की लड़की से विवाह करने के लिए क्यूं मना करूंगा। यदि तुम वास्तव में उसे पसंद करते हो तो जाति और आर्थिक स्थिति कभी बीच में नहीं आने देना। जब प्रकृति कोई जातिभेद नहीं मानती तो हम ही क्यों माने। खाते तो हम सब रोटी ही हैं। और फिर ऐसा तो कुछ नहीं है कि हमारे खून का रंग लाल और उनका नीला हो। फिर कैसा भेद। सवर्ण और अवर्ण के बीच दूरियों को बनाए रखने वाले समाज नियमों को मैं नहीं मानता और मैं नहीं चाहता कि मेरा बेटा भी इसे माने। जो कायदे-कानून इंसानियत को जख्मी करने लगे उन्हें मिटाने की जिम्मेदारी हमारी ही है। जानते हो मैं जब एम.ए. फाइनल में था तो मुझे तुम्हारी दादी ने बीमारी का झूठा बहाना बनाकर गाँव बुला लिया। पिताजी ने मेरा रिश्ता कहीं पक्का कर दिया था। उन्हें लड़की पसंद थी, इसलिए उन्होंने जबरन मेरी शादी करवा दी। उन्होंने इतना भी पूछना जरूरी नहीं समझा कि मैं शादी करना चाहता हूँ या नहीं। उस दौरान मैं एक लड़की को प्रेम करता था और शादी भी करना चाहता था। वह ऊँची जाति की नहीं थी। पर मेरी पिताजी और दादाजी के सामने एक न चली। जिसका मलाल मुझे आज तक है। मैं उस लड़की को कभी भुला न पाया। मैं हमेशा यही सोचता था कि काश! मैं निम्न परिवार में जन्मा होता तो उस लड़की से विवाह कर पाता। तेरी मम्मी के देहांत के बाद सबने मुझे दूसरा विवाह करने के लिए विवश किया किंतु मैंने पुनर्विवाह नहीं किया क्योंकि मैं किसी और की जिंदगी खराब नहीं करना चाहता था, इसलिए बेटा जाति को अगर जड़ से उखाड़ फेंकना है तो सवर्ण और अवर्ण का भेद छोड़ना ही होगा, तभी जातिभेद खत्म होगा।' पापा की कही बात सुनाकर श्रेय कुछ पल के लिए शांत हो गया। उसने दो-एक पल बाद ही अपने सिर नीचे से ऊपर उठाया, और अवनी के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए प्रस्ताव रखा, 'अवनी मुझसे शादी करोगी?'

श्रेय का प्रस्ताव सुनकर अवनी सकपका-सी गई। उसने अपने-आप को अंदर से समेटा, और श्रेय की आँखों में देखते हुए सिर हिलाकर कर कह दिया, 'हाँ।'

अवनी की सहमति पाकर श्रेय के शरीर में रोमांच की फुरफरी दौड़ गई, हर्ष से उसका चेहरा चमक उठा। उसे अचानक से महसूस हुआ कि आज ये 'महकता कोना' पहले से कही अधिक महक रहा है।❑

डिजिटल आपका धन, समय और संसाधन बचाता है।